हिंदी–छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत

कक्षा – 3

सत्र 2024–25

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

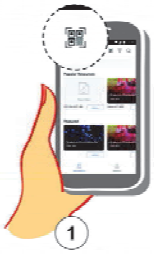

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाइप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

प्रकाशन वर्ष 2024

मार्गदर्शन

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मुख्य समन्वयक

श्री आर. के. वर्मा

विषय समन्वयक

बी. आर. साहू, विद्या डांगे

लेखक मण्डल

हिंदी	छत्तीसगढ़ी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, राजेन्द्र पाण्डेय, गजानन्द प्रसाद देवांगन, श्रीमती उषा पवार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, अजय गुप्ता, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम।	एम.एस.वर्मा, दिनेश गौतम, भूषण लाल परगनिहा, एम. जाकिर, रामकुमार वर्मा, रमेश यादव, श्रीमती तृप्ता कश्यप, शिवकुमार अंगारे, योगेन्द्र बेलचंदन	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी,(समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव, प्रशांत, गिरिधारी साहू

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उस पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवरचित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षो तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय विषय के विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की गई और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया गया है।

भाषा–शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर एवं प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो! हिंदी कक्षा–3 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किंतु वह राज्य के मात्र दो सौ विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों, अपने राज्य के तथा राज्य के बाहर के शिक्षाविदों तथा राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरांत प्रायोगिक संस्करण में आवश्यक सुधार करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

इस संस्करण में हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछें और उनके उत्तर दें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न उनसे पूछें। इससे आपको भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसात कर पाए हैं या नहीं।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न कई तरह के हैं। कुछ प्रश्न तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ प्रश्न कार्य–कारण संबंध वाले हैं तथा कुछ अन्य प्रश्न कल्पना व सृजनात्मकता वाले हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में बच्चों को सोचना पड़ेगा; अतः ऐसे प्रश्नों से वे अधिक सीख सकेंगे। बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर यदि बच्चे अपनी भाषा में दें या लिखें तो अच्छा है।

विद्यार्थियों के उच्चारण पर भी आप ध्यान दें। विद्यार्थी बहुधा श–स; छ–क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक–से–अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते हैं।

यही प्रक्रिया शब्दार्थ के संबंध में भी अपनाई गई है। शब्द का अर्थ विद्यार्थी की समझ में आ गया, यह तभी सही माना जाएगा, जब विद्यार्थी उस शब्द को वाक्य में प्रयोग कर सकेगा। बच्चे इन शब्दों का उपयोग कर जितने वाक्य बता सकेंगे उतना ही अच्छा है।

उच्चारण दोष के साथ–ही–साथ विद्यार्थियों के वर्तनी संबंधी दोषों को दूर करने के लिए श्रुतिलेखन पर भी प्रस्तुत पुस्तक में बल दिया गया है। श्रुतिलेख की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक दूसरे की अभ्यास–पुस्तिका देखने को दें। ये अभ्यास पुस्तिकाएँ बच्चे आपके मार्गदर्शन में देखेंगे। इससे उन्हें शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी। श्रुतिलेख के द्वारा बच्चों को सुधार लेख लिखने का भी अभ्यास होगा।

योग्यता–विस्तार के अंतर्गत कुछ ऐसे अभ्यास दिए गए हैं जिनमें बच्चों की सृजनशीलता का विकास होगा। ये अभ्यास अलग– अलग प्रकार के हैं, जैसे कहीं बच्चों से ढूँढ़कर या पूछकर या सोचकर कुछ लिखने को कहा गया है। कहीं चित्र या टिकटें या पत्तियाँ संग्रह करने को कहा गया है; कहीं किसी पक्षी या पशु के बिंदु–चित्र से उसका पूरा चित्र बनाने के लिए कहा गया है; कहीं किसी घटना का कक्षा में या बालसभा में वर्णन करने को कहा गया है। ऐसे क्रियाकलापों से बच्चों का

रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। समय–समय पर कक्षा या बालसभा में वादविवाद, अंत्याक्षरी, चित्र–निर्माण आदि का आयोजन करने से या उन्हें ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाने और उस पर लेख लिखवाने के क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं का विकास होगा। आपको यह देखना है कि इन क्रियाकलापों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई भी इतना सुझाव नहीं दे सकती जितना एक सुयोग्य शिक्षक दे सकता है। वह शिक्षक ही है जो, नीरस विषयवस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति को अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली रहती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि हमारे इन सुझावों पर आप विचार करेंगे और यदि इन सुझावों को उपयोगी समझें तो अवश्य अपनाएँगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

हिंदी

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	हिंदी	
1.	सीखो	1–4
2.	सच्चा बालक	5–9
3.	मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी)	10–13
4.	बंदर बाँट	14–19
5.	मीठे बोल	20–22
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	23–27
7.	चाँद का कुरता	28–32
8.	चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी)	33–39
9.	आदिमानव	40–44
10.	चुहिया की शादी	45–49
11.	दादा जी	50–54
12.	हाथी	55–60
13.	होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी)	61–63
14.	कौन जीता	64–67
15.	मैं हूँ महानदी	68–72
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	73–76
17.	सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी)	77–83
18.	जंगल में स्कूल	84–87
19.	तेल का गिलास	88–92
20.	अब बतलाओ	93–98
21.	मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी)	99–103
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	104–108
23.	कविता का कमाल	109–115
24.	बालसभा	116–118
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	119–123
	संस्कृत	124–136
	राजू की कहानी	i–xvi

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :–

- अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों।
- हिन्दी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने–सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने, प्रतिक्रिया देने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिन्दी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चों कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द–भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।
- 'पढ़ने का कोना/पुस्तकालय' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्री; जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो–वीडियो सामग्री उपलब्ध हो।
- तरह–तरह की कहानियों, कविताओं, पोस्टर आदि को चित्रों और संदर्भ के आधार पर समझने–समझाने के अवसर उपलब्ध हों।
- विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों का कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, किसी जानकारी

सीखने की संप्राप्ति (Learning Ourcomes)

बच्चे –

LH301. कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से समझते हुए सुनते और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्ति करते हैं।

LH302. कहानी, कविता आदि को उपयुक्त उतार–चढ़ाव, गति, प्रवाह और सही पुट के साथ सुनाते हैं।

LH303. सुनी हुई रचनाओं की विषय–वस्तु घटनाओं, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, प्रश्न पूछते हैं, अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, राय बताते हैं/अपने तरीके से (कहानी, कविता आदि) अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं।

LH304. आस–पास होने वाली गतिविधियों/घटनाओं और विभिन्न स्थितियों में हुए अपने अनुभवों के बारे में बताते, बातचीत करते और प्रश्न पूछते हैं।

LH305. कहानी, कविता अथवा अन्य सामग्री को समझते हुए उसमें अपनी कहानी/बात जोड़ते हैं।

LH306. तरह–तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं, अपनी राय देते हैं, शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक/लिखित रूप से) देते हैं।

LH307. अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (मौखिक, सांकेतिक) देते हैं।

को निकाल पाना, किसी घटना या पात्र के संबंध में तर्क, अपनी राय दे पाना आदि।

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों।
- अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका इस्तेमाल करने के अवसर हों।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों।
- अपना परिवार, विद्यालय, मोहल्ला, खेल का मैदान, गाँव की चौपाल जैसे विषयों पर अथवा स्वयं विषय का चुनाव कर अनुभवों को लिखकर एक–दूसरे से बाँटने के अवसर हों।
- एक–दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उन पर अपनी राय देने, उनमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग–अलग ढंग से लिखने के अवसर हों।

LH308. अलग–अलग तरह की रचनाओं में आए नए शब्दों को संदर्भ में समझकर उनका अर्थ सुनिश्चित करते हैं।

LH309. तरह–तरह की कहानियों, कविताओं/रचनाओं की भाषा की बारीकियों (जैसे – शब्दों की पुनरावृत्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विभिन्न विराम चिह्नों का प्रयोग आदि) की पहचान और प्रयोग करते हैं।

LH310. अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर आधारित प्रश्न पूछते हैं/अपनी राय देते हैं/ शिक्षक एवं अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करते हैं।

LH311. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत वर्तनी के प्रति सचेत होते हुए स्व–नियंत्रित लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) करते हैं।

LH312. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में शब्दों के चुनाव, वाक्य संरचना और लेखन के स्वरूप (जैसे–दोस्त को पत्र लिखना, पत्रिका के संपादक को पत्र लिखना) को लेकर निर्णय लेते हुए लिखते हैं।

LH313. विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विराम–चिह्नों, जैसे– पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

LH314. अलग–अलग तरह की रचनाओं/सामग्री (अखबार, बाल पत्रिका, होर्डिंग्स आदि) को समझकर पढ़ने के बाद उस पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं, पूछे गए प्रश्नों के उत्तर (लिखित/ब्रेल लिपि आदि में) देते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	सीखने के प्रतिफल
1.	सीखो	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309, LH311
2.	सच्चा बालक	LH301, LH303, LH305, LH306, LH307, LH308
3.	मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH311, LH312
4.	बंदर बाँट	LH301, LH302, LH308, LH309, LH310, LH311
5.	मीठे बोल	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	LH301, LH302, LH303, LH304, LH306, LH308, LH312
7.	चाँद का कुरता	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308, LH311
8.	चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH306, LH307, LH308
9.	आदिमानव	LH301, LH302, LH303, LH305, LH306, LH308
10.	चुहिया की शादी	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308
11.	दादा जी	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308
12.	हाथी	LH301, LH302, LH304, LH305, LH308, LH309
13.	होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309
14.	कौन जीता	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH311
15.	मैं हूँ महानदी	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH309, LH311, LH312
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH309, LH310, LH311, LH312
17.	सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH304, LH305, LH308
18.	जंगल में स्कूल	LH301, LH302, LH304, LH305, LH307, LH308
19.	तेल का गिलास	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH309
20.	अब बतलाओ	LH301, LH302, LH304, LH305, LH306, LH307, LH312
21.	मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी)	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH307, LH308, LH310, LH311
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH308, LH309, LH312
23.	कविता का कमाल	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH307, LH308, LH309, LH311, LH312
24.	बालसभा	LH301, LH302, LH303, LH304, LH305, LH306, LH309, LH311, LH312

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter अध्याय	Sub-Topics उप-विषय	Level -1 स्तर-1	Level -2 स्तर-2	Level -3 स्तर-3	Level -4 स्तर-4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :		Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना	Understand, explain, Illustrate, summaries, match समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना	apply, organize, use, solve, prove, draw प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना	evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना
1	2	3	4	5	6
सीखो	• लयपूर्वक वाचन व हाव भाव से वाचन • अर्थ समझना • शब्दार्थ • प्रकृति से जुड़ाव • विशेषण	• कविता याद होना। • समानार्थी व पर्यायवाची शब्दों को बताना। • प्रकृति को समझ पाएगा।	• अर्थ समझ जाता है। • पाठ में आए शब्दों के विलोम शब्द बता पाना। • प्रकृति से प्राप्त चीजों को जानेगा।	• अपनी भाषा में अर्थ को व्यक्त कर पाना। • कविता को आगे बढ़ा पाना। • प्रकृति की सुरक्षा तथा दोहन की समझ बनेगी।	• अर्थ के साथ–साथ निहित भाव को समझना। • संबंधित पाठ के आधार पर कोई और कविता सुना पाता है। • प्रकृति से प्राप्त चीजों की विशेषता को समझ कर अपनी भाषा में लिख पाना